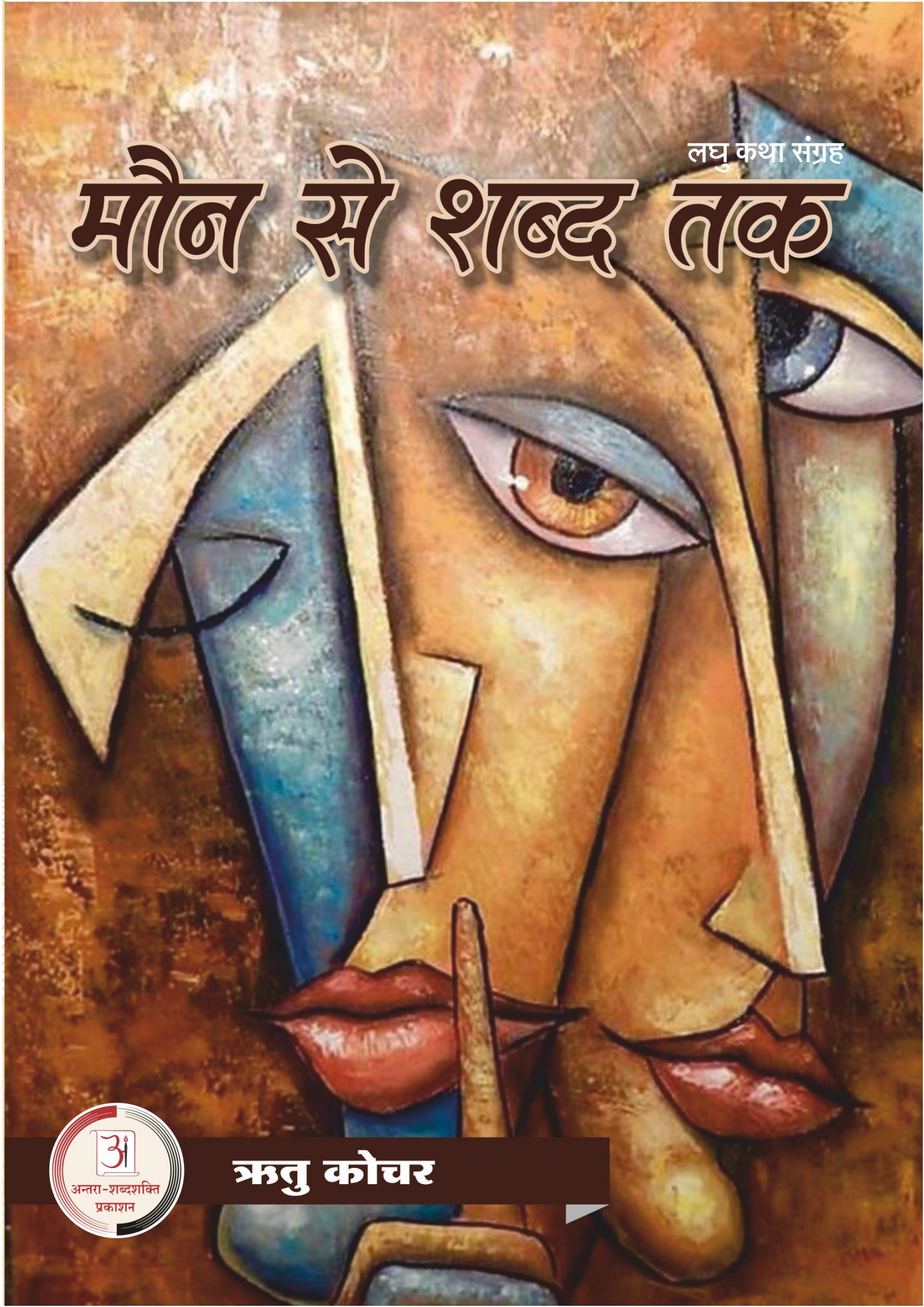
लघु कथा संग्रह
मौन से शब्द तक
अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
ऋतु कोचर

मौन से शब्द तक

लघु कथा संग्रह

ऋतु कोचर

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश 481331

978-93-94528-70-3

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरु चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल-9009423393
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2026, **ऋतु कोचर**
मूल्य- 100/- रुपये
मुद्रक– सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RITU KOCHAR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

सृजन और मैं!

सृजन से बनी मेरी पहचान है, ये कलम ही तो मेरा मान है।
हौसला दिया आप सबने मुझे, इस मंच को दिल से प्रणाम है.....

सृजन..... कैसे एक शब्द लेकर भाव अभिव्यक्ति की जा सकती है और वही सृजन बन जाता जाता है। इस मंच की यही तो खूबी है। अनेक छुपी हुई प्रतिभाओं को पटल दिया, और कड़ी से कड़ी जोड़कर आज सैकड़ों का कारवाँ बन गया।

मैंने भी इस पटल से बहुत कुछ सीखा, और ज़िंदगी के इस मोड़ पर एक पहचान बनाई। आज जब भी किसी से मिलती हूँ तो लोग कहते हैं—ऋतु बहुत अच्छा कर रही हो। सच में मन प्रफुल्लित हो उठता है और गर्व भी होता है। मेरा सृजन तो मेरी देवरानी और इस अंतरा शब्दशक्ति परिवार की कर्णधार प्रीति की ही देन है। भजन आदि बनाने वाली मैं आज आप जैसे प्रबुद्ध लोगों में शामिल हूँ, ये सब उसी का प्रयास है।

पाँच साल हो गए इस मंच से जुड़े हुए, पर लगता है अभी भी बहुत कुछ सीखना है। जीवन का हिस्सा बन चुका ये दैनिक सृजन मेरे मनोगत भावों को नित नए आयाम दे रहा है, जिसके लिए मैं अन्तःकरण से आभारी हूँ।

- ऋतु कोचर
कटंगी (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
1.	अवसर	5
2.	उतावलापन	6
3.	आक्सीजन	7
4.	साक्षात्कार	8
5.	हाथी के दाँत	9
6.	कहानी एक बेटी की	10
7.	दुविधा	11
8.	दो जून की रोटी	12
9.	प्रशंसा	13
10.	व्यथा	14
11.	विधि का विधान	15
12.	कर्ज	16

अवसर

सुजाता बाज़ार से बड़ी सारी खरीदी करके लौटी। पसीने से लथपथ, थककर चूर सोफ़े पर बैठ गई। पति और बेटा घर पर ही थे। बहू को आवाज़ लगाई, नेहा पानी लेकर आई। थोड़ी देर आराम करने के बाद बाज़ार से लाए सामान को एक-एक करके सबको बताने लगी।

बारी-बारी सबके लिए लाए उपहार को देख नेहा अपनी बारी का इंतज़ार कर रही थी और उसका सब्र समाप्त हुआ। सुजाता ने नेहा के लिए लाई साड़ी उसे दे दी, जो उसे बहुत पसंद भी आई। ये पहली बार नहीं था जब सुजाता अपनी बहू के लिए कुछ लाई। वो ऐसे हर अवसर को इन छोटी-छोटी खुशियों को बाँटने के लिए, सबके चेहरे पर मुस्कान बिखराने के लिए ढूँढ ही लेती थी। गरीब ज़रूरतमंदों की मदद का भी कोई अवसर वह नहीं चूकती थी। अपनी हैसियत अनुसार मदद ज़रूर करती थी। उसकी यही खूबी उसे दूसरों से अलग बनाती थी।

हमें भी हर ऐसे अवसर का, जो किसी के चेहरे पर खुशी लाने में मदद करे, उपयोग ज़रूर करना चाहिए। ज़िंदगी छोटी है, पर नाम बड़ा किया जा सकता है।

उतावलापन

परीक्षाएँ हो चुकी थीं। आर्ची की 10 दिन की छुट्टी लगी थी और घर में रहकर बोर हो चुकी अंजू ने उतावलेपन में ही मायके जाने का निर्णय ले लिया। जबकि विकास ने समझाया भी कि इतने से दिनों के लिए क्या जाती हो, जब पूरी छुट्टी लग जाए तो चले जाना। वैसे भी ये कोरोना बीमारी के चलते वो अंजू और अपनी बेटी से दूर नहीं होना चाहता था। पर मायके का जायका ही ऐसा होता है। अंजू कहाँ मानने वाली थी। अपना बोरिया-बिस्तर पैक किया और आर्ची को लेकर मायके निकल गई।

सात-आठ दिन हुए ही थे कि मोदीजी द्वारा जनता कफ़र्यू और लॉकडाउन की घोषणा हो गई। सारे यातायात के साधन बंद हो गए, सीमाएँ सील कर दी गईं। अब तो चाहकर भी कोई एक जगह से दूसरी जगह नहीं जा सकता था। शुरु में तो अंजू को बहुत अच्छा लग रहा था, पर धीरे-धीरे एक बेचैनी-सी होने लगी।

एक तरफ अंजू का पति, जो इतने दिनों से खुद अकेले अपना गुज़र-बसर कर रहा था, और दूसरी तरफ अंजू के दो भाइयों का परिवार—बीमार माँ-पापा और आय के सब ज़रिये बंद। ऐसे में अब उसे बेहद शर्मिंदगी महसूस होती कि ऐसे समय में मेरा और मेरी बेटी का खर्च और बढ़ गया। भाई-भाभी अच्छे हैं तो कुछ कहते नहीं, पर मैंने उतावलेपन में यहाँ आकर बहुत बड़ी गलती की कि इस विषम समय में मेरा फ़र्ज़ था कि अपने परिवार और पति के साथ रहूँ। पर अब कर ही क्या सकते थे। जब तक देश की परिस्थितियाँ सामान्य न हो जाएँ और जिलों की सीमाएँ खुल न जाएँ, अंजू को अपने मायके में ही समय निकालना होगा।

अंजू अब पछतावे के साथ ही सोचती है कि.... हर समय मायके की ज़िद भी अच्छी नहीं होती।

आक्सीजन

यूँ ही संघर्षों की कमी नहीं थी सौम्या के जीवन में। उस पर बेटी की बीमारी ने तो जैसे उसकी कमर ही तोड़ दी। लंबे समय से फेफड़ों के संक्रमण से जूझती बेटी परी ज़्यादातर बीमार ही रहती थी। पर अभी तो उसे होने वाली वेदना दुगुनी हो गई थी, जब आक्सीजन की कमी से उसे साँस लेने में भी दिक्कत हो रही थी। सौम्या हर संभव कोशिश कर रही थी, पर आक्सीजन की कमी ठीक ही नहीं हो रही थी और उसकी ये तकलीफ़ अब परिवार से देखी नहीं जा रही थी। हॉस्पिटल ने भी हाथ खड़े कर दिए। क्या करे, इस कोरोना के चलते आक्सीजन सिलेंडर की कमी जो थी। सब करके देख लिया, पर कोई इंतज़ाम नहीं हो पा रहा था। सामने तिल-तिल मरती परी को देख अब सौम्या की हिम्मत जवाब दे रही थी।

तभी अचानक फ़ोन की घंटी बजी और सालों पहले की सहेली रचना फ़ोन पर थी। इस महामारी के वक़्त सिर्फ़ हाल-चाल जानने फ़ोन किया। तब सौम्या ने उसे अपनी बेटी के बारे में बताया। क़िस्मत से उसके संबंधों के चलते जल्द ही आक्सीजन का प्रबंध हो गया और कुछ दिन में परी स्वस्थ हो गई। सौम्या को सब कुछ सपना-सा लग रहा था। उसने अनेकों धन्यवाद के साथ रचना को फ़ोन किया और परी की कुशलता की ख़बर दी।

सच में ज़िंदगी में जब सब जगह अँधेरा दिखता है, ये दोस्त न जाने कहाँ से सब जान जाते हैं और मदद के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे कुछ दोस्त सभी के जीवन में होने चाहिए, जो बिना किसी स्वार्थ के मदद के लिए खड़े रहते हैं।

अब भी संभलना होगा। वृक्षों से मिली प्राकृतिक आक्सीजन की क़द्र करें, जो बहुमूल्य है पर जिसका कोई मूल्य नहीं। वरना, जैसे हर गली में पानी बिकता है, वैसे वो दिन दूर नहीं जब गली-गली आक्सीजन भी बिकेगी और खरीददार हम ही होंगे.....!

साक्षात्कार

एक समय था जब शादी के लिए लड़की से साक्षात्कार किया जाता था। बात सालों पहले की है। नवीन ने जवानी की दहलीज़ पर कदम रखा ही था, और शादी की चर्चा चलने लगी। दूर के रिश्तेदार की बेटी रूदाली अभी सत्रह की ही थी, पर उसे अपने बेटे नवीन के लिए उसके बड़ों ने योग्य पाया और एक दिन निश्चित किया गया साक्षात्कार के लिए।

थोड़ा-बहुत पढ़ी-लिखी रूदाली न शादी के लिए तैयार थी, न साक्षात्कार के लिए। पर ये बात उस समय की है जब अपने बड़ों के आगे न नानुकुर चलती, न मनमर्ज़ी। सो रूदाली भी इस रूढ़िवादिता से पीड़ित होने को भारी मन से तैयार हो गई। कम उम्र में शादी तो उस समय आम बात थी और संविधान में शादी की उम्र का कोई नियम न था। पर विदेश से पढ़कर आया नवीन कुछ नए ख्याल वाला था। उसे परंपराओं के नाम पर होती रूढ़िवादिता पसंद न थी। वह लड़का-लड़की को बराबर मानता था। इसलिए साक्षात्कार हो तो दोनों का हो, वरना किसी का नहीं—ऐसी उसकी सोच थी।

घरवाले परेशान और वो हैरान कि क्या करें। रीतियों से हटकर जब विरोध होता है तो घमासान तो होता ही है। पर कुछ समय के घमासान के बाद सब नवीन की बात से सहमत हो गए और साक्षात्कार के बजाय दोनों को आपस में समय बिताने का समय दिया गया। फिर दोनों की रज़ामंदी से विवाह साआनंद संपन्न हुआ।

हाथी के दाँत

जहाँ बैठता, समा बन जाए—ऐसा व्यक्तित्व था कार्तिक। हर एक करीबी को उसके आने का इंतज़ार रहता कि कब वो आए और सारा माहौल हल्का कर दे। घरेलू समस्याओं की चेहरे पर शिकन भी नहीं दिखाता।

हर किसी का प्यारा कार्तिक सवेरे-सवेरे ही घर से ऑफिस के लिए निकल गया। लैपटॉप पर आज की अपडेट देख काम शुरु कर ही रहा था कि संजू बोली—क्या यार कार्तिक, कल तू नहीं आया तो सारा ऑफिस सूना लग रहा था।

क्या बात हो गई? तभी तपाक से राजन बोला—संजू, इस कार्तिक के हाथी के दाँत हैं।

क्या मतलब? संजू बोली।

ये जो इतना हँसता-हँसाता कार्तिक दिखता है न, वास्तव में इसके खुद के घर में अनेक समस्याएँ हैं। परिस्थिति भी ठीक नहीं है। बाहर भले ये सबका चहेता बने, पर घर में तो दुखी ही है। ऐसा व्यक्ति किस काम का, जिसके खाने के दाँत अलग हों, दिखाने के अलग। खुद घर की दिक्कतें तो सुलझा नहीं पाता, बाहर वालों से मज़ा-मस्ती करने से क्या फायदा—राजन बोला।

कार्तिक ने सुन लिया तो बोला—यह ज़रूरी तो नहीं कि जो खुद दुखी है वो किसी को हँसा नहीं सकता, या खुद समस्याग्रस्त व्यक्ति दूसरों की समस्या का समाधान नहीं कर सकता। अब इसमें आपको हाथी के दाँत नज़र आएँ तो समस्या आपको है, मुझे नहीं। कोई मुझसे मिलकर या मेरे सुझावों से खुश होता है तो मैं ऐसे कई दाँत लगवाने के लिए तैयार हूँ। बोलो, तुम्हें कोई दिक्कत...

राजन तो अवाक रह गया...।

किसी को खुश करने के लिए लगे हाथी दाँत तो दाँत अच्छे हैं...।

कहानी एक बेटी की

स्मिता की कहानी भी उन हज़ारों लड़कियों की कहानी है, जो अपने परिवार की खुशियों के लिए ही जीती हैं। सुंदर, व्यवहारिक, बुद्धिमान—हर गुण से संयुक्त स्मिता अपने निम्न वर्गीय परिवार की बड़ी बेटी थी। पिता नसेड़ी, अपनी ज़िम्मेदारियों से कोसों दूर, अपनी ही मस्ती में मस्त रहा करते थे। माँ लोगों के घरों में खाना बनाकर गुज़ारा किया करती थी। स्मिता भी उसके काम में मदद किया करती थी। जैसे-तैसे वो पढ़ाई कर पा रही थी। बारहवीं के बाद उसने प्राइवेट पढ़ाई की, ताकि कुछ काम करके घर खर्च में हाथ बँटा सके। किसी तरह दाल-रोटी लायक कमाई हो रही थी। स्मिता होनहार होने के बाद भी कोई विशेष पढ़ाई नहीं कर पाई। तभी उसके लिए एक रिश्ता आ गया।

माँ-बाप ने ज़ोर दिया—घर-घराना अच्छा है, पैसे वाले हैं, आगे भाई-बहनों के लिए कुछ जुगाड़ हो जाएगा। बेचारी स्मिता बहुत पशोपेश में थी। पर अपने परिवार की आर्थिक मदद के लिए स्मिता राज़ी हो गई और अपनों के लिए अपनी खुशी की आहुति दे दी।

निश्चित ही ऐसा साहसिक कदम एक बेटी ही उठा सकती है, जो अपने परिवार से असीम प्यार करती है।

दुविधा

ग्रीष्मकालीन छुट्टियाँ शुरू होते ही सभी की तरह दीप्ति के भी मन में मायके जाने के ख़याल हिलोरे मारने लगे। क्यों न हो, अपनी जन्मभूमि, अपने पीहर का मोह भला कौन छोड़ पाता है। दीप्ति भी इसी उधेड़बुन में लगी थी कि कैसे ससुराल में बात शुरू करे। यूँ तो ननंदजी के आने की बाट सासूजी पूरे साल जोहती हैं, पर मेरे जाने के नाम पर तो चिंता की गहरी लकीरें उनके माथे पर क्यों खिंच जाती हैं। यही विचार दीप्ति को अंदर तक जला कर रख देता था।

दूसरी तरफ पतिदेव—क्यों जाना है, क्या करेगी, इस साल नहीं जाएगी तो क्या बिगड़ेगा—ऐसे कई सवाल दाग देंगे और हर साल की तरह दोनों में मनमुटाव हो जाएगा। यह सब सोचकर दीप्ति कैसे बात करूँ, भूमिका बनाने लगी। क्योंकि जाना तो था। यदि इन बातों को दिल पर लेकर बैठी रहेगी तो ससुराल वाले तो इतना ही चाहते हैं कि ये न जाए, क्योंकि इन्हें बहू से ज़्यादा काम की चिंता होती है।

जैसे-तैसे मायके से फ़ोन लगवाकर, सबके फूले मुँह-नाक देखकर भी दीप्ति का मायके जाना तय हुआ।

आख़िर इतनी दुविधा का सामना अपने माँ-बाप के घर जाने के लिए क्यों करना पड़ता है। ससुराल का एक साल, जिसमें से कुछ 15–20 दिन ही तो हैं, जो हम अपनी मर्ज़ी से जीना चाहते हैं, तो किसी को इतनी दिक्कत क्यों होती है—यह बात दीप्ति के मन से निकल ही नहीं पा रही थी।

दीप्ति की तरह हर स्त्री को इस दौर से रुबरू होना ही पड़ता है। चाहे ज़माना कितना भी बदल जाए, पर जब तक इंसान की सोच नहीं बदलती, किसी का उद्धार होने वाला नहीं है। इसलिए सोच की दिशा बदल दो, स्वयं की दशा अपने-आप बदल जाएगी।

दो जून की रोटी

घर से निकला था कहकर—माँ, मैं शहर जा रहा हूँ, कुछ कमा कर ही लौटूँगा। बड़ी उम्मीद से घर से विदा हुआ। बीवी-बच्चे को रोता-बिलखता छोड़कर। दो जून की रोटी की आस, परिवार को चलाने की मजबूरी और घर से बहुत दूर चल दिया। दिन-रात एक करके मेहनत-मशक्कत करके किसी तरह घर का पालन-पोषण कर पा रहा था। तभी इस मुए कोरोना ने सबके मुँह से मानो निवाला ही छीन लिया।

काम बंद तो कमाई ढप्प। फिर तो शहर भी रास नहीं आ रहा। बहुत दिन सब्र किया कि लॉकडाउन खुलेगा और फिर से गाड़ी पटरी पर आएगी, पर ऐसा नहीं हुआ। कमर कसकर हिम्मत जुटाई और पैदल ही घर के लिए निकल पड़े।

क्या करें, मुश्किल के इस वक़्त में कमाई का ज़रिया खत्म तो कम से कम परिवार तो साथ हो। इसी आस से बढ़ रहे थे। थककर चकनाचूर हुए तो पटरी पर ही आराम करने लगे और घरवालों से मिलने के सपने लिए सो गए। पर उन्हें क्या पता था कि नींद मौत में बदल जाएगी। मालगाड़ी के आने की आहट भी सुनाई नहीं दी और ज़िंदा इंसान चिथड़ों में बदल गए।

उनकी गलती क्या थी? बस इतनी कि वे गरीब थे, मजबूर मज़दूर थे, परिवार का साथ चाहते थे और परिवार से मिले बिना ही इतने दूर हो गए कि अब यादों और बातों में ही रह गए।

गलती किसकी है, कौन जवाबदार है, मुआवज़ा मिलेगा या नहीं—ये प्रश्न हल कर भी लिए जाएँ तो भी न वो मज़दूर वापस आएँगे और न ही परिवारजनों का दुख कम होगा। क्योंकि जान की कोई क़ीमत नहीं होती। कब तक ये सिलसिला चलता रहेगा। इस अनजानी मौत से इंसान कब तक रुबरु होता रहेगा। ऐसे कई सवाल हैं, जिनके जवाब न जाने कब तक मिलेंगे और न जाने कब जीवन पहले की तरह सामान्य होगा।

तब तक...

घर पर रहें, सुरक्षित रहें...।

प्रशंसा

संजू एक सरल-सीधा व्यक्तित्व, साधारण परिवार का एक साधारण लड़का। शादी जल्दी हो गई, जब समझ भी उतनी नहीं थी। अब सिर पर आई थी तो निभाना तो था। और उस पर जब जीवनसाथी के रूप में एक अमीर घर की बेटी हो, तो डर तो लगता ही है कि कहीं कुछ ऊँच-नीच न हो जाए।

पर संजू ने तो जैसे जादू कर दिया। सब कुछ अपने-आप संभलने लगा और गृहस्थी पटरी पर चलने लगी। सभी को खुश रखने की जद्दोजहद में उसे जीत हासिल होने लगी। पराए घर से आई लड़की हो, चाहे खुद का परिवार—सभी उसकी दिल से प्रशंसा करते थे।

माता-पिता के साथ समय बिताना, हाल-चाल पूछना, सेवा करना—सब उसकी ज़िंदगी का अहम हिस्सा था। साथ ही पत्नी के काम में मदद करना, उसे खुश रखना भी वह भूलता नहीं था। पता नहीं कोई व्यक्ति इतना सब एक साथ कैसे कर पाता है। प्रशंसा का पात्र तो वह था ही, पर सबसे बड़ी बात ये थी कि उस प्रशंसा को उसने कभी अपना अभिमान नहीं बनने दिया। क्योंकि प्रशंसा से इंसान मान रूपी हाथी पर आरूढ़ हो ही जाता है।

पर संजू तो अपना कर्म किए ही जा रहा था, किसी भी गर्व से दूर, अभिमान से निर्लिप्त...।

व्यथा

रश्मि और उसका पति काम के कारण अपने परिवार से दूर, अकेले रहते थे। रश्मि का एक बेटा था और वह पुनः गर्भवती थी। सब कुछ अच्छा चल रहा था। रश्मि भी स्वस्थ थी। गर्भावस्था में उसे कोई दिक्कत नहीं थी।

ऐसे में इस कोरोना महामारी के चलते सब कुछ एकदम से बंद हो गया। यातायात के साधन, ज़रूरत का सामान—सभी में मुश्किलें आने लगीं। शुरू में तो रश्मि ने यह सोचकर कि कुछ दिनों की बात है, धैर्य नहीं खोया। पर फिर देखा लॉकडाउन तो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा। तब उसकी चिंता बढ़ने लगी—कैसे अकेले डिलीवरी का निपटारा होगा। परिवार का कोई साथ नहीं, अपनी व्यथा कहे भी तो किससे।

मोहल्ले वाले फिर भी जो बन पड़ा, मदद कर दिया करते थे। पर ऐसे समय में, चाहे स्वार्थवश ही सही, सास की याद आ ही जाती है। पर मजबूरी इतनी कि वो भी रेड ज़ोन में हैं, आ नहीं सकतीं।

अब करे तो क्या करे। बड़ी मुश्किल से पास ही रह रही जेठानी को बुलाया और जैसे-तैसे डिलीवरी का काम निपटा। पर उसके बाद की सार-सँभाल कौन करे। जेठानी ने भी अपना बोरिया-बिस्तर बाँधा और चली गई।

अब तो रश्मि की पूरी देखभाल उसका पति सोनू करने लगा। पर अनुभव की कमी के कारण दिक्कतें आने लगीं। बार-बार एस.डी.एम. के यहाँ अर्ज़ी लगाकर हार गए, पर कुछ हो नहीं रहा था। पर किस्मत अच्छी थी—इस बार अनुमति मिल गई और रश्मि अपने मायके चली गई और राहत की साँस ली।

ये समय उसका ऐसे निकला जैसे एक सदी हो। इतनी मानसिक और शारीरिक व्यथा भगवान किसी को भी न दे। सच में, जिसकी व्यथा वही जान सकता है। लोगों को बातें करने में क्या लगता है—उठाई ज़बान, लगाए तालू से कह दी बात....।

विधि का विधान

एक गांव में अंश नाम का लड़का रहता था

माता पिता का गांव में काफी नाम था पर अंश अपने जीवन में कुछ कर नहीं पा रहा था जिसका उसे हमेशा खेद रहता, पढ़ा लिखा होते हुए भी जीवन की दिशा और दशा क्यों नहीं बदल रही यही सोच उसे खाए जाती, ऐसे में लंबी बीमारी से उसके पापा की मृत्यु हो गई जिसका उसे गहरा आघात लगा, बड़ों ने कहा बेटा ये तो विधि का विधान है, इसे कौन रोक पाया है।

अब तो अंश को कोई बड़ा निर्णय लेना ही था उसने मां के साथ शहर में बसने का फैसला लिया, और अपनी पढ़ाई अनुसार काम ढूंढने लगा, जल्द ही उसे एक निजी बैंक में जॉब मिल गई तनख्वाह भी अच्छी खासी थी सब कुछ पटरी पर आ गया।

अच्छे दिन आने पर अधिकतर व्यक्ति अपने बुरे दिन को भूल जाता है अंश भी खुशी खुशी अपना निर्वाह करने लगा और अच्छी लड़की देख शादी भी कर ली, जिम्मेदारियां तो बढ़ ही गई थी मां भी अब बीमार रहने लगी थी सभी

अचानक बैंक ने भी अपने कर्मचारियों को निकालना शुरू कर दिया, अंश पर तो जैसे वज्राघात हो गया बड़ों ने कहा जो होना होता है वो होकर रहता है चिंता मत कर पर कहना आसान है ऐसा अंश ने कहा।

धीरे धीरे दिन बीते फिर पता चला कि उस बैंक पर तो करोड़ों रुपये का कर्ज था और वो बंद हो गई, अंश ने जैसे राहत की सांस ली सोचा जो हुआ अच्छा हुआ यही विधि का विधान है।

कर्ज

दर्शन एक बहुत बड़ा डॉक्टर था,और किस्मत से प्रेक्टिस भी जोर शोर से चलती थी, परिवार में भी सब खुश थे,बच्चे भी अच्छे स्कूल में अध्ययनरत थे।

एक रोज शंकर नामक मजदूर अपने बच्चे को लेकर दर्शन के पास आया वो बहुत दिनों से पेट दर्द से परेशान था। हॉस्पिटल में बहुत भीड़ थी नर्स ने शंकर को रुकने को कहा पर दर्द इतना था कि सब्र करना मुश्किल था नर्स ने दर्शन को कहा कि एक बच्चा दर्द से तड़प रहा है उसे बुला लूं पर दर्शन किसी परिचित का इलाज कर रहा था तो ध्यान ही नहीं दिया, उस बच्चे ने तड़प तड़प कर दम तोड़ दिया। कुछ दिन हल्ला हुआ बात आई गई हो गई

सितारा दर्शन की पत्नी ने सबके लिए खाना बनाया,दर्शन और मां तो खा कर सो गए पर मेहुल को खाने के बाद लगातार उल्टी होने लगी सितारा ने दर्शन को उठाया,सभी उपाय और चिकित्सा के बाद भी दर्शन को आराम नहीं हो रहा था,अपने सीनियर डॉक्टर से बात करके दर्शन ने बेटे को उनके हॉस्पिटल में एडमिट कराया, इत्तेफाक से दर्शन को शंकर मिला जो सीनियर डॉक्टर के घर शेफ का काम करता था

डॉक्टर का लंच देने हॉस्पिटल आया, उसे देख दर्शन को उस दिन की घटना याद आ गई और जो कुछ भी हो रहा था उसी घटना की पुनरावृत्ति लगी उसने शंकर से माफी मांगी जो कि पर्याप्त तो नहीं थी पर शंकर ने फिर भी दर्शन के बेटे मेहुल के लिए प्रार्थना की और "कर्मों का कर्ज" शायद अदा हो गया हो मेहुल ठीक हो गया और दर्शन ने शंकर को भारी धनराशि देकर विदा किया और अपना कर्ज चुकाने का प्रयास किया।

जीवन में भी कर्मों का "कर्ज" चुकाए बिना छुटकारा नहीं है, जैसा करेंगे वैसा भरेंगे यही संसार की रीत है और कर्मों की भी.....

नाम - ऋतु कोचर

शिक्षा - बी.ए.

विद्या - गायन,भजन लेखन,नृत्य,पाक कला में विशेष रूचि, सामाजिक संस्था एक कदम राजनांदगांव की सदस्या। वर्तमान में काव्य सृजन में विशेष रूचि।

सम्मान- गायन, नृत्य, निबंध, वाद-विवाद आदि में अनेक संस्थाओं से पुरस्कृत।

पता - वार्ड नं. 14, सिनेमा चौक, मेन रोड़, कटंगी तह. कटंगी, जिला बालाघाट (म.प्र.) पिन- 481445

मोबाइल - 8770573730

ईमेल- ritukochar320@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-94528-70-3

मूल्य- 100/-

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com